टिप्पणी

16

भारत पाकिस्तान युद्ध (1947-1948)

हिंसा और जनसंख्या के विस्थापन के साथ भारत व पाकिस्तान ने स्वतंत्रता प्राप्त की। विभाजन के समय कश्मीर भारत-पाक समस्या की जड़ बन गया। अगस्त 1947 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के परिणाम स्वरूप कश्मीर के महाराजा हरिसिंह और भारत सरकार के मध्य अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर हुए। यह अंगीकार पत्र (Instrument of Accession) 26 अक्टूबर 1947 को प्रभावी हुआ। इससे पाकिस्तान में तनाव बढ़ गया और पाकिस्तान ने अपनी सेना और मुजाहिद्दीनों को भारत पर आक्रमण करने के लिए भेजा। दो अन्य राज्यों में भी सेना द्वारा राष्ट्रीय एकता हेतु आपरेशन चलाया गया। पहला राज्य हैदराबाद था जिसे भारत में मिलाने के लिए ऑपरेशन पोलो चलाया गया। दूसरा राज्य गोवा था जहाँ पर पुर्तगाली और उनके समर्थकों को भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना ने संयुक्त रूप से 'ऑपरेशन विजय' चलाकर खदेड़ दिया।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप:-

- कश्मीर की समस्या का कारण जान सकेंगे;
- भारत पाकिस्तान युद्ध (1947-1948) में भारतीय वायुसेना द्वारा दिए गए योगदान का वर्णन कर पाएँगे;
- हैदराबाद व गोवा को मुक्ति का वर्णन कर सकेंगे।

16.1 कश्मीर समस्या की उत्पत्ति

भारतीय उपमहाद्वीप को अगस्त 1947 में आजादी मिली। उस समय यहाँ 565 रियासतें थीं जिनके पास भारत का लगभग 2/5 भाग था। (मानचित्र 16.1) जिसकी कुल जनसंख्या 99 मिलियन थी। इन्हें ही तय करना था कि ये भारत या पाकिस्तान किसकी तरफ जाएँगे। 1947 से पूर्व भारत ऐसा दिखता था।

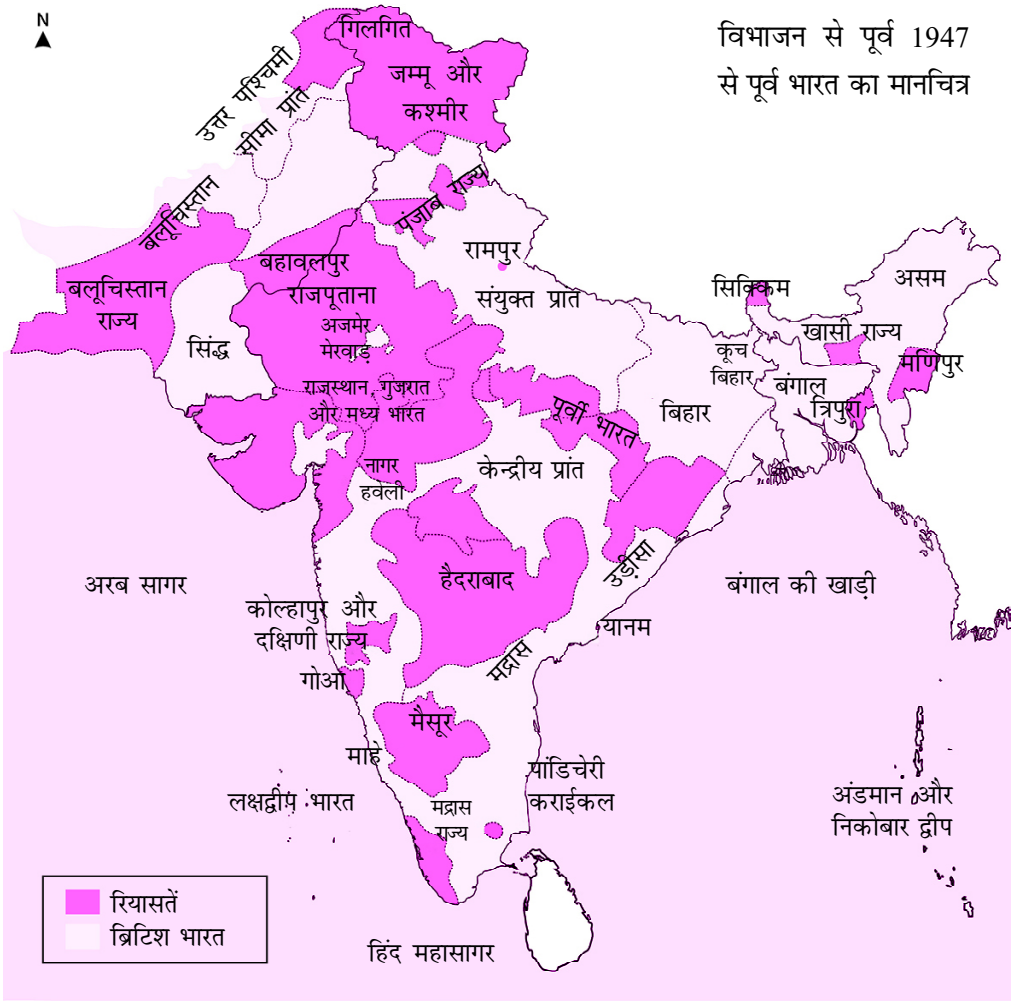

चित्र 16.1 : विभाजन से पूर्व भारत का मानचित्र

जम्मू व कश्मीर का शासक जिसका राज्य दोनों देशों के मध्य स्थित था, यह फैसला नहीं कर पाया कि वह किस देश में शामिल होगा। यहाँ के महाराजा हरि सिंह हिंदू थे किंतु उनकी प्रजा अधिकतर मुस्लिम थी। इसलिए उन्होंने पाकिस्तान के साथ यथावत बने रहने का एक समझौता कर लिया जिसमें व्यापार, यातायात और संचार क आवगमन बे रोकटोक चल सके। यह समझौता तात्कालिक (कुछ समय) का था। भारत ने इस प्रकार का कोई समझौता नहीं किया। पाकिस्तान ने इस समझौते का गलत फायदा उठाकर जम्मू व कश्मीर पर आर्थिक व अन्य दबाव बनाने शुरू कर दिए, इसका उद्देश्य जम्मू कश्मीर का पाकिस्तान में विलय कराने का था। जम्मू व कश्मीर जाने वाला एकमात्र रेलमार्ग भी बंद कर दिया गया तथा श्रीनगर-रावलपिंडी मुख्य सड़क पर ट्रैफिक को रोका जाने लगा। जब यह दबाव कार्य नहीं कर पाया तो पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर में कबाइलियों द्वारा हमला करा दिया। यहीं से कश्मीर समस्या का जन्म हुआ।

क्रियाकलाप 16.1

इंटरनेट पर खोज कर के मुजाहिद्दीन के बारे में उत्तर पुस्तिका में लिखें।

16.1.1 कश्मीर घाटी पर आक्रमण

पाकिस्तान ने अपनी सीमा पार से कश्मीर घाटी पर आक्रमण किया। यह आक्रमण पूर्व नियोजित था और दो भागों में किया गया। पहले भाग में धावा बोलने वालों ने पाकिस्तान कश्मीर सीमा पर आक्रमण किया। ये आक्रमणकारी हजारों की संख्या में थे। यह आक्रमण 20 अक्टूबर 1947 को प्रारंभ हुआ। यह आक्रमणकारी अधिकतर पाकिस्तान की उत्तर पश्चिमी फ्रंटियर रियासत के हजारा और पश्तून कबीलों के थे।

कश्मीर में आक्रमणकारी भी दो बार में आए। पहले मुजफ्फराबाद से श्रीनगर की ओर तथा दूसरे नौशेरा-पूंछ क्षेत्र से आए। इन्होंने मार्ग में आने वाले सभी स्थानों पर कब्जा कर श्रीनगर पर आक्रमण किया। 24 अक्टूबर को महाराजा हरिसिंह ने भारत के गर्वनर जनरल लॉर्ड माउंटबेटन को आवश्यक संदेश पहुँचाया कि आक्रमणकारियों को रोकने के लिए वे भारत की सहायता चाहते हैं। पाकिस्तान द्वारा बड़े स्तर पर आक्रमण किए जाने के बाद महाराजा ने भारत में विलय करने का निर्णय लिया और 26 अक्टूबर 1947 को अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। भारतीय सेना तत्काल श्रीनगर और पुंछ पहुंच गयी और उन्होंने आक्रमणकारियों को हरा दिया।

पाकिस्तान ने अक्टूबर 1947 में कारगिल, श्रीनगर और पुंछ पर हमला किया। ये सभी स्थान मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र थे।

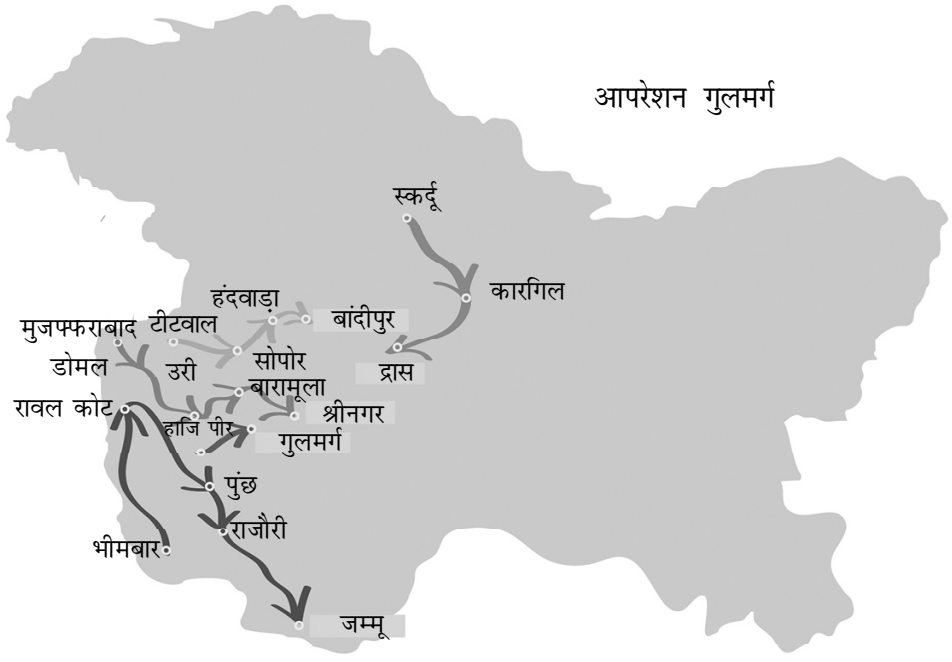

चित्र 16.2 : आक्रमण मार्ग

पाठगत प्रश्न 16.1

1. महाराजा हरिसिंह कौन थे?
2. 1947 में कश्मीर पर आक्रमण करने वाले पहले आक्रमणकारी कौन थे?
3. भारत सरकार और महाराजा हरिसिंह के मध्य अंगीकार पत्र पर हस्ताक्षर कब हुए थे?

क्रियाकलाप 16.2

उपरोक्त मानचित्र देखकर उन स्थानों को चिन्हित कीजिए जहाँ से पाकिस्तानी आक्रमणकारी भारत में आए थे?

16.2 1947 में भारतीय सशस्त्र सेना

सेना	भारत	पाकिस्तान
गोला बारूद रेजिमेंट	12	6
तोपखाना रेजिमेंट	18.5	8.5
पैदल बटालियन	88	33

वायुसेना	भारत	पाकिस्तान
लड़ाकू स्क्वाड्रन	6	2
परिवहन स्क्वाड्रन	1	1

नौसेना	भारत	पाकिस्तान
छोटी नाव (Sloops)	4	2
माईन स्वीपर्स (Mines Sweepers)	3	1

16.2.1 1947-1948 के युद्ध की प्रमुख घटनाएँ

1947-1948 के बीच भारतीय सेना ने अनेक युद्धों में भाग लिया यह युद्ध सर्दी और गर्मी के मौसम में हुए थे। यहाँ यह जानना भी आवश्यक है कि इन युद्धों में किस प्रकार की रणनीति और युद्ध कौशल का प्रयोग किया गया। नीचे पाकिस्तानियों को भारत से बाहर निकाल फेंकने के लिए 1947 की सर्दियों में लड़ी गई प्रमुख लड़ाइयों का वर्णन है।

श्रीनगर, कारगिल और पुंछ में हुई लड़ाईयाँ

ऑपरेशन गुलबर्ग : श्रीनगर में युद्ध

एक सिख कमांड के 300 सिपाही लेफ्टिनेट कर्नल दीवान रंजीत राय के नेतृत्व में 27 अक्टूबर को श्रीनगर पहुंचे। कर्नल राय का काम था कि वह श्रीनगर शहर के साथ-साथ हवाई क्षेत्र की भी रक्षा करें। इनकी सेना की टुकड़ियों की बहादुरी व शौर्य के कारण आक्रमणकारी दो दिन तक वहीं रुके रहे। इसी बीच और अधिक सेना श्रीनगर पहुँचा दी गई। कर्नल राय ने श्रीनगर की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी कारण उन्हें मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया गया।

पाठगत प्रश्न 16.2

1. पाकिस्तानी आक्रमणकारियों ने जम्मू व कश्मीर के किन क्षेत्रों पर कब्जा किया था?
2. लेफ्टिनेंट कर्नल दीवान रंजीत राय कौन थे? उन्हें 1947 में महावीर चक्र क्यों दिया गया था?

शैलातंग का युद्ध

भारतीय वायु सेना के हवाई जहाजों ने बंदूकें, तोपें और गोला बारूद श्रीनगर पहुँचाया। उनका अगला काम कश्मीर घाटी से आक्रमणकारियों को भगाना था। यह काम भारतीय सेना की एक ब्रिगेड द्वारा किया गया। इनका मुख्य हमला शैलातंग नामक स्थान पर हुआ। यह हमला इतना तेज़ था कि शत्रु सेना मात्र 20 मिनट में हार गई। सभी आक्रमणकारी मुजफ्फराबाद की ओर भाग गए। भारतीय वायुसेना के हमलों में आक्रमणकारियों को बहुत नुकसान हुआ। कश्मीर घाटी के बारामूला और उरी पर भारतीय सेना ने आधिपत्य स्थापित कर लिया।

नौशेरा पर हमला

सर्दियों के मौसम में उत्तरी भाग में बर्फबारी होने के कारण सारी गतिविधियाँ जम्मू के दक्षिणी भाग में ही सिमट गई थीं। शत्रु सेना अपने तोपों की तैनाती जम्मू व पुंछ के बीच स्थित नौशेरा में कर रही थी। 5 व 6 फरवरी की रात दुश्मन सेना ने नौशेरा पर तीन तरफ से हमला कर दिया। यह युद्ध भयायनक था जिसमें शत्रु पक्ष काफी हताहत हुआ। हमारे हथियारों का प्रभावशाली प्रयोग ही हमारी जीत और शत्रु के हार का कारण बना।

पुंछ पर हमला

अक्टूबर 1947 में आक्रमणकारियों ने पुंछ पर हमला कर उसकी घेराबंदी कर ली। भारतीय सेना ने लेफ्टिनेंट कर्नल प्रीतम सिंह के नेतृत्व में पुंछ पहुँचकर शहर की रक्षा करने का बीड़ा उठाया। सेना ने रात में पेट्रोलिंग (निरीक्षण) करके आक्रमणकारियों को ढूँढ़-ढूँढ़ समाप्त कर दिया। इसके पश्चात् शत्रु पुंछ में दाखिल नहीं हो पाए। दिसंबर 1947 में वायुसेना ने इस क्षेत्र में तोपें और बंदूकें पहुँचाई। यही कार्य श्रीनगर में भी किया गया था। आक्रमणकारियों के हमलों

के कारण शरणार्थी और उनके रहने की समस्या पैदा हुई। यही हवाई जहाज सामग्री पहुँचाकर शरणार्थियों को जम्मू व अन्य सुरक्षित क्षेत्रों तक लेकर गए। भारतीय सेना ने आक्रमणकारियों को आगे बढ़ने से रोका।

16.2.2 कारगिल हमला : ऑपरेशन बाइसन (BISON)

आप जानते हैं कि पाकिस्तानी आक्रमणकारी कारगिल में भी आए थे। इनको खदेड़ने के लिए 1 नवम्बर 1948 को जोजिला दर्रा से एक ऑपरेशन चालू किया गया था। 22 नवंबर 1947 तक कारगिल सभी आक्रमणकारी से मुक्त हो गया था। यह हमला जनरल थिमैया के नेतृत्व में किया गया। उन्होंने टैंक, तोप और वायु सेना का प्रयोग कर पाकिस्तानियों को हराया। इसी समय कर्नल शेर जंगथापा ने सर्कादू की रक्षा की। उन्होंने एक साल तक चले युद्ध में बिना किसी अतिरिक्त सहायता (गोला बारूद आदि) के शत्रु सेना को परास्त किया। कोई भी मदद न मिलने के कारण उसको पाकिस्तान के आगे समर्पण करना पड़ा। सर्कादू अब पाक अधिकृत कश्मीर का हिस्सा है।

पाठगत प्रश्न 16.3

1. भारत के मानचित्र पर निम्न स्थान अंकित कीजिए-

   (क) जोजिला दर्रा (ख) कारगिल, द्रास और मताईन

2. 1948 में कारगिल की आजादी के लिए चलाए गए ऑपरेशन का क्या नाम था?

सीज़फायर (युद्ध विराम)

लॉर्ड माउंटबैटन की सलाह पर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र ले गए। दिसंबर 1947 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र में यह शिकायत की। जिसमें कश्मीर पर पाकिस्तान का हमला, उनके सैनिक व गैर सैनिक आक्रमणकारियों के हमले की भी चर्चा की गयी। कुछ समय तक पाकिस्तान ने अपना हाथ होने की बात नहीं मानी। उनका कहना था कि ये कबीलाई क्रांति है। किंतु समय के साथ उहोंने अपनी संलिप्तता को स्वीकार किया। 13 अगस्त 1948 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रस्ताव पारित कर दोनों देशों से युद्ध विराम करने का अनुरोध किया। साथ ही उन्होंने एक समिति का भी गठन किया जो युद्ध विराम को निरीक्षण करेगी। 1 जनवरी, 1949 को दोनों देश युद्ध विराम के लिए तैयार हो गए। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र द्वारा भारत व पाकिस्तान के लिए एक कमीशन गठित हुआ। (United Nations Commission for India and Pakistan - UNCIP) इसका उद्देश्य युद्ध विराम की निगरानी करना था। एक अन्य कमेटी का भी गठन हुआ जो कि किसी भी पक्ष द्वारा युद्ध विराम के उल्लंघन न करने को सुनिश्चित करेगी। ये समिति थी- (United Nations Military Observer Group for India and Pakistan - UNMOGIP) भारत व पाकिस्तान हेतु संयुक्त राष्ट्र सैन्य निरीक्षण समूह।

16.3 हैदराबाद का विलय

ब्रिटिश भारत में सूबे और रजवाड़ा रियासतें थीं। भारत का लगभग 60% क्षेत्र सूबों में बँटा हुआ था तथा शेष 40% क्षेत्र रजवाड़ों के पास था। सूबे ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन थे जबकि रजवाड़े यहाँ के स्थानीय राजाओं के अधीन थे। इन राजाओं का विशेष पदवी जैसे- महाराजा, राजा, महाराणा, राणा निजाम इत्यादि प्राप्त थीं। इनमें से एक 'हैदराबाद' पर दक्षिण भारत में निजाम का शासन था।

1. हैदराबाद राज्य में कई भाषाएँ बोली जाती थी जैसे- तेलुगु, मराठी, कन्नड़ और उर्दू। इस में वर्तमान तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के भाग शामिल थे। निजाम मीर उसमान अली खान एक मुस्लिम शासक था। यहाँ अधिकतर प्रजा हिंदू धर्मम्वालंबी थी। यह राज्य सबसे अमीर था। विश्व में निजाम सबसे अमीर शासक था। यह राज्य अपने आप में स्वावलंबी था। इस राज्य की अपनी मुद्रा (हैदराबादी रुपया) थी। इसकी अपनी सेना, रेलवे, रेडियो नेटवर्क, डाकघर आदि थे। मानचित्र 16.3 में हमें 1947 से पहले की सभी रियासतें दिखाई देती हैं।

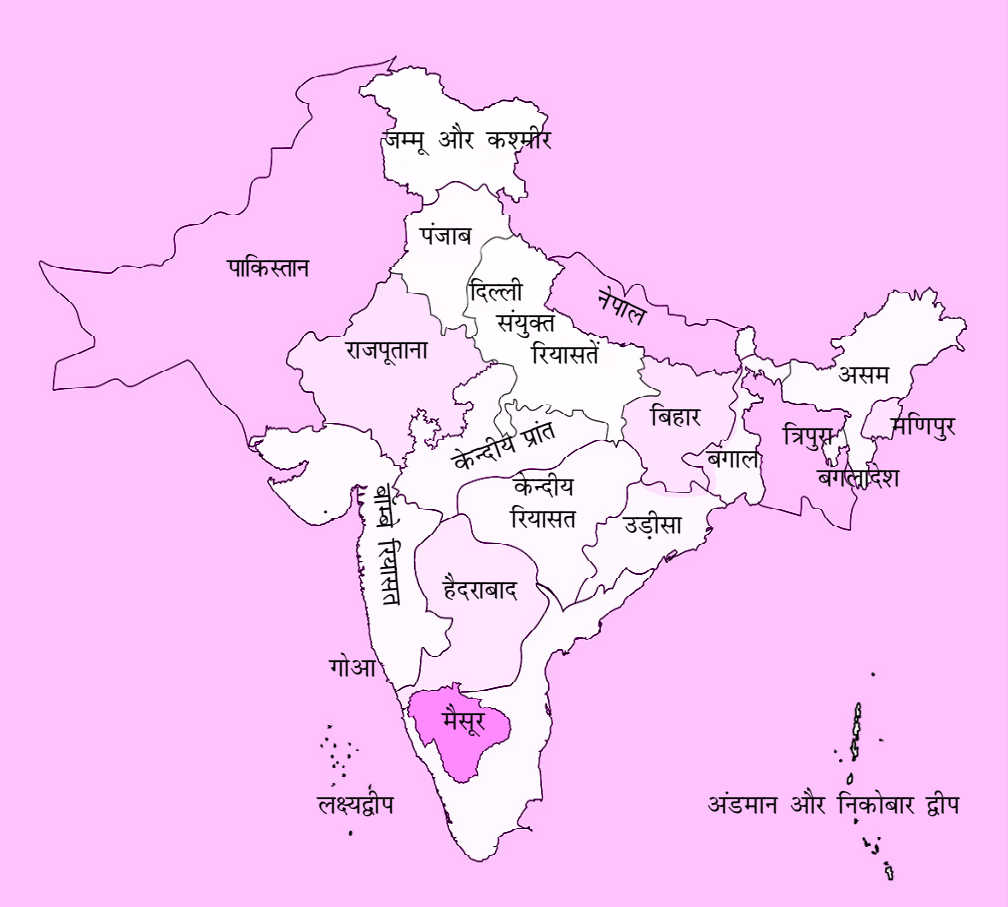

चित्र 16.3 : ब्रिटिश काल में भारत

2. ब्रिटिश शासन समाप्त होने के पश्चात भारत के अंतिम गर्वनर जनरल लॉर्ड माऊंटबेटन ने सभी रियासतों को या तो भारत या पाकिस्तान में विलय अथवा स्वतंत्र रहने की छूट दी। हैदराबाद के निजाम ने ब्रिटिश कॉमनवेल्थ राष्ट्रों के अंतर्गत स्वतंत्र संवैधानिक राजशाही बनाने का निवेदन किया। इस प्रस्ताव को गवर्नर जनरल ने स्वीकार नहीं किया। जब यह स्पष्ट हो गया था कि भारत एक आजाद हैदराबाद को स्वीकार नहीं करेगा तब निजाम ने पाकिस्तान में विलय का प्रस्ताव भी रखा। भारत जम्मू व कश्मीर में पाकिस्तान से युद्ध कर ही रहा था। हैदराबाद को लेकर वह सतर्क हो गया। निजाम भारत में मिलना नहीं चाहता था। उसके अड़ियल रवैये से दुखी होकर भारत ने हैदराबाद में सेना भेजकर विद्रोह का दमन कर दिया।

16.3.1 ऑपरेशन पोलो

1. केंद्र सरकार ने हैदराबाद निजाम से पहले कदम के रूप में यथास्थिति बनाए रखने का एक समझौता किया। यह समझौता नवंबर 1947 में किया गया। जिसमें हैदराबाद का पाकिस्तान में विलय नहीं करने का आश्वासन माँगा गया। हैदराबाद भारत का ही हिस्सा रहेगा। इस समझौते के तहत के.एम. मुंशी को भारतीय सरकार का दूत नियुक्त कर हैदराबाद के एजेंट जनरल के तौर पर भेजा गया। किंतु निजाम ने उन्हें ठीक प्रकार से सम्मान नहीं दिया। उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। निजाम की निजी सेना को राजाकार कहते थे और उन्होंने सामान्य जनता को परेशान करना शुरू कर दिया। इस प्रकार की स्थिति के परिप्रेक्ष्य में भारत के गृहमंत्री सरदार पटेल ने हैदराबाद का विलय करने की ठानी।

2. हैदराबाद पुलिस की कार्यवाही को ऑपरेशन पोलो (POLO) का नाम दिया गया। भारतीय सेना ने पैदल सेना, टैंक और तोपखाने को ऑपरेशन में शामिल किया। यह ऑपरेशन 13 सितंबर 1948 को प्रारंभ हुआ। यह युद्ध सोलापुर के निकट नालदुर्ग किले में हुआ। मात्र पांच दिन के इस युद्ध में राजाकार और हैदराबादी सेना हार गयी।

3. हैदराबाद रियासत की सेना का पूर्ण विनाश हुआ। इस सेना में 490 लोगों की मौत हुई, 122 लोग घायल हुए और लगभग 1647 युद्ध बंदी हुए। राजाकार सेना का भी नुकसान हुआ। उन्होंने 1373 सिपाही खो दिये और 1911 युद्ध बंदी बन गए। इसी के साथ हैदराबाद का अलग राज्य बनने का सपना भी टूट गया। निजाम समझ गया था कि वह हार गया है। इससे सामंती व दमनकारी शासन का अंत हुआ। हैदराबाद का भारत में विलय हो गया। हैदराबाद को मिलाने के निर्णय के औचित्य पर अनेक लोगों ने प्रश्न उठाए। तथापि भौगोलिक तथा सांस्कृतिक रूप में भारत से जुड़ी एक रियासत को भारत का अभिन्न भाग बनाना आवश्यक था।

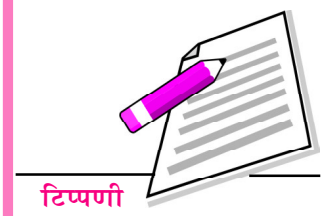

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 16.4

1. हैदराबाद में पुलिस की कार्यवाही के बारे में लिखिए।
2. हैदराबाद का विलय आवश्यक क्यों था?
3. 'ऑपरेशन पोलो' को कब शुरू किया गया था?

16.3.2 गोवा का विलय

पृष्ठभूमि

(क) भारत से व्यापार करने हेतु सर्वप्रथम पुर्तगाली आए। इनके पश्चात् डच, ब्रिटिश और फ्रेंच आए। पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा कालीकट के तट पर आया। यह तट दक्षिण पश्चिम भारत का हिस्सा है। वह 20 मई, 1498 ई. को आया था। पुर्तगालियों का भारत में उदय 1505 ई. में हुआ। फ्रांसिसकों डि एलमेड़ा भारत का पहला पुर्तगाली गवर्नर था। उसकी नीति भारत के समुद्र पर नियंत्रण करने की थी। इसे उसने ब्लू वाटर पॉलिसी (Blue Water Policy) का नाम दिया था।

(ख) पुर्तगाली गर्वनर अल्फोसों डि अलबरक्यू के ने गोवा पर 1510 ई. पर कब्जा कर लिया था। उसे ही भारत में पुर्तगाली शासन का संस्थापक कहा जाता है। बाद में गोवा भारत में पुर्तगाली बस्तियों का मुख्यालय बन गया। पुर्तगालियों ने तटीय क्षेत्र पर शासन किया। उनकी नौसेना भी उनकी सफलता का एक कारण बनी। 16वीं शताब्दी के अंत तक पुर्तगालियों का गोवा, दमन, दीव और सिलासेट के साथ-साथ भारत के तटीय क्षेत्रों में भी शासन एवं कब्जा हो गया था।

गोवा व न्यायिक जाँच

पुर्तगाली औपनिवेशिक सरकार ने हिंदू धर्म के विरुद्ध कानून लागू किए। उनका उद्देश्य हिंदुओं को परेशान कर ईसाई बनाना था। इस धर्म परिवर्तन के लिए उन्होंने कानून बनाकर ईसाइयों द्वारा को हिंदुओं को नौकरी पर रखना प्रतिबंधित कर दिया। साथ ही हिंदुओं द्वारा सार्वजनिक पूजा करने को दंडनीय अपराध बना दिया। गोवा न्यायिक जाँच का संबंध भारत में गोवा राज्य और 1560 में एशिया में स्थापित पुर्तगाली साम्राज्य की न्यायिक जाँच से है।

स्वतंत्रता उपरांत भारत और गोवा

ब्रिटिश से आजादी पाने के पश्चात् पुर्तगाल ने गोवा से अपना शासन हटाकर भारत के अधीन करने से इंकार कर दिया था। 1954 से पुर्तगालियों ने भारतीयों के शांत सत्याग्रह का दमन करना प्रारंभ कर दिया। यह सत्याग्रह पुर्तगालियों के शासन से मुक्ति पाने के लिए था। पुर्तगालियों ने सेना का प्रयोग कर दमनकारी कार्यवाही और भारतीय उनके नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके पश्चात् भारत ने पणजी में स्थित अपने वाणिजियक दूतावास को बंद

कर दिया। दूतावास 1947 में खोला गया था। इससे गोवा के क्षेत्र पर आर्थिक प्रतिबंध जैसे हालात बन गए। 1955 से 1961 तक भारतीय सरकार ने 'प्रतीक्षा करें व देखें' की नीति के तहत पुर्तगाली सालाजार सरकार के समक्ष बातचीत के अनेक प्रस्ताव रखे। भारत ने इस मुद्दे को वैश्विक स्तर पर भी उठाने के प्रयास किया। 1961 में भारत ने ऑपरेशन विजय के अंतर्गत गोवा को पुर्तगालियों से आजादी दिलवाई। सालाजार सरकार ने गोवा, दमन व दीव, पर भारत की संप्रभुता को अस्वीकार करते हुए पुर्तगाली संसद में उनके प्रतिनिधित्व को 1974 तक जारी रखा। उस वर्ष पुर्तगाल में हुई कारनेशन क्रांति (Cornation Revolution) के पश्चात् लिस्बन (पुर्तगाल) में बनी नयी सरकार ने दमन, गोवा दीव पर भारत की संप्रभुता को स्वीकार कर लिया और कूटनीतिक संबंधों को पुनर्स्थापित कर लिया। सैनिक कब्जे तथा पुर्तगाली लोगों की इच्छा के कारण सरकारी तौर पर लोगों को पुर्तगाली नागरिक बने रहने का अधिकार बना रहा। 2006 से यह अधिकार केवल पुर्तगाल शासन के दौरान पैदा हुए लोगों तक सीमित कर दिया।

ऑपरेशन विजय

गोवा की स्वतंत्रता की प्रक्रिया वह तरीका था जिससे भारत ने पुर्तगालियों से गोवा, दमन व दीव को अपने कब्जे में लिया था। यह ऑपरेशन 13 दिसम्बर 1961 को प्रारंभ हुआ था। यह कार्रवाई जनरल चौधरी ने नेतृत्व में हुई थी। यह कार्यवाही 'गोवा की आजादी' के रूप में जानी जाती है। इसका कूट नाम ऑपरेशन विजय था। यह ऑपरेशन 36 घंटे से अधिक चला जिसमें जल, थल व वायु सेना, तीनों का प्रयोग किया गया था। इससे 451 वर्ष से भी पुराना पुर्तगालियों का शासन भारत में समाप्त हो गया। यह युद्ध लगभग दो दिन तक चला। इसमें 22 भारतीय सैनिक शहीद हो गए और 30 पुर्तगाली सैनिकों ने अपनी जान गंवा दी। इस युद्ध की विश्व में कहीं प्रशंसा तो कहीं निंदा हुई। भारत ने यह कार्यवाही भारतीय क्षेत्र की आजादी के लिए की थी। वहीं दूसरी ओर पुर्तगालियों के लिए यह उनके नागरिकों और राष्ट्र पर आक्रमण था।

(क) भारत ने रणनीति के तहत गोवा और भारत को जोड़ने वाला सभी रास्ते बंद कर दिए। साथ ही नौसेना व वायुसेना से समन्वय सफलता की रीढ़ की हड्डी था। सीमा रेखा व मार्गों को बंद करने हेतु भारतीय वायु सेना ने बैंबोलिम के रेडियो स्टेशन पर बम फेंके। वायु सेना ने गोवा के तट पर INS बरेवा, INS बीस और हवाई जहाज वाहक INS विराट तैनात किए जिससे गोवा की सीमा रेखा पूरी तरह से बंद हो गई।

(ख) अंत में 19 दिसंबर 1961 को गोवा में भारतीय राष्ट्र ध्वज फहराया गया। यह ध्वज मेजर के.पी. कांडेय ने फहराया था और उसी शाम 6 बजे पुर्तगाली गर्वनर सालो डि सिल्वा ने औपचारिक ब्रिगेडियर के.एस. ढिल्लन के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था और यह कार्रवाई समाप्त हो गई यह आत्मसमर्पण पुर्तगाली गवर्नर की गाड़ी की हेडलाइट के नीचे हुआ था।

क्रियाकलाप 16.3

1947-1948 में जम्मू कश्मीर युद्ध में परमवीर चक्र विजेताओं की सूची बनाइए तथा उनके चित्र ढूँढिए। उनके चित्रों को मानचित्र में उनके द्वारा लड़े गए युद्ध के स्थानों पर चिपकाइए।

पाठगत प्रश्न 16.5

1. ऑपरेशन विजय क्या था?
2. आपरेशन विजय कब शुरू हुआ था?
3. गोवा को पुर्तगालियों के शासन से आजादी कब मिली?

आपने क्या सीखा

- कश्मीर समस्या की पृष्ठभूमि।
- स्वतंत्रता पश्चात् भारतीय सेना की बहादुरी व शौर्य।
- भारतीय सेना द्वारा भारत पाकिस्तान युद्ध (1947-1948) में किए गए प्रमुख ऑपरेशन जैसे ऑपरेशन गुलमर्ग, शैलातांग का युद्ध, नौशेरा हमला और गर्मियों में किए गए अन्य हमले।
- ऑपरेशन पोलो के अंतर्गत हैदराबाद का भारत में विलय।
- ऑपरेशन विजय के तहत गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त करवाना।

पाठांत प्रश्न

1. 1947 के भारत पाकिस्तान युद्ध पर संक्षिप्त नोट लिखिए।
2. 'ऑपरेशन गुलमर्ग' के तहत हुई कार्रवाइयों की सूची बनाइए?
3. स्वतंत्रता पूर्व रजवाडे और रियासतों की भूमिका क्या थी?
4. हैदराबाद के भारत में विलय के लिए उठाए गए प्रमुख कदमों को स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1

1. 1947-1948 के भारत-पाक युद्ध के समय जम्मू व कश्मीर में महाराजा हरिसिंह का शासन था।

2. हजारा व पश्तून कबीलायी

3. 26 अक्टूबर 1947

16.2

1. मुजफ्फराबाद, डोमेल, उरी और बारामूला

2. पहली सिख रेजीमेंट की कमान लेफ्टिनेंट कर्नल दीवान रंजीत राय के पास थी। उन्होंने पाकिस्तानी आक्रमणकारियों को रोकर श्रीनगर हवाई अड्डे पर अधिपत्य स्थापित कर लिया था। विकट परिस्थितियों में भी उन्होंने 2 दिन तक शत्रु सेना को रोके रखा। इस युद्ध में वह मारे गए और मरणोपरांत उन्हें महावीर चक्र से सम्मानित किया गया।

16.3

1. भारत के मानचित्र पर खोजिए।

2. ऑपरेशन बाइसन

16.4

1. यह ऑपरेशन भारतीय सेना ने हैदराबाद का भारत में विलय करने हेतु किया था।

2. हैदराबाद के राजा एक अलग राष्ट्र चाहते थे और भारत का हिस्सा नहीं बनना चाहते थे।

3. 13 सितंबर 1948

16.5

1. ऑपरेशन विजय एक सैन्य कार्यवाही थी जिसका उद्देश्य पुर्तगालियों द्वारा अधिकृत भारतीय क्षेत्रों को पुर्तगाल से मुक्त कराना था।

2. 13 दिसंबर 1961

3. 19 दिसंबर 1961